

नमः ममक्षमहाहयविष्णुसमक्षं यास्यहगवद नमः
नाकयमां यावदवीचियांमेनविषमां ॥ १ ॥ कृत्तमन्य
स्त्रियहक्षमन्य ॥ हनमंमनायाक्षिसहस्र ॥ नाथमयाकृ
ययापनययं नागयसंयुति ॥ कासिकययं ॥ ५ ॥ ना
क्षिविकसंलामृति ॥ ६ ॥

ASHA ARCHIVES

KY. 3812. 5

न सा कश्चन समय समस्तं ॥ १ ॥ कश्चन तदं विमल लक्ष्मं
॥ १ ॥ सत्यानाय कश्चिन्निगमहि मं ॥ स्वयमनमोदि नम
यि यत्र विहिमं ॥ कदि दाना मम माम स पायं ॥ स्तुतया ना
थ कशाग विलायं ॥ ५ ॥ ददमन व्यासुत्र जागो नां ॥ मिश्र
कनत्र कं पुन ग मिनां ॥ सत्या रु निव सक्ति सदा रू ॥ ज रु

सिग अ समयि न अ समयि वा रू ॥ १ ॥ कनम नाय मि स
रू का नू रू ॥ यी रु ग मी नं ग रु का नू रू ॥ ०० मि ग नू रु ग य न
रू व मि म नो मि ॥ या व न्न न कं ने द म ग्वा मि ॥ ७ ॥ कि रू रू
पु रू क नो मि क लायं ॥ मू रू सि रु ग य न मा म कि ना था ॥ अथ
वा य मि क या द अ यू रू ॥ कन न स वि वि वि वि क म यि यू रू

॥ १० ॥ सप्तमं क्रमां सिद्धां सिद्धिं सिद्धयं ॥ कथयति कथयं
किं किं किं दूखं ॥ कसमां कुरुते कुरुते नयति नयति ॥ क
यं मा कुरुते मा मिदुते ॥ १० ॥ दंति सप्तमं क्रमां युक्त कलाः
यं ॥ जायते मयं थ कथि मयि थिं ॥ मां सा सिद्धिं गीता सुक
ययं नं ॥ ह मथ थि ह्या दुरु मयं ॥ ११ ॥ अजुन युगिं

कायाद्रुका सिद्धिः ४ सिद्ध्या यमकुरुते मं लुनी सुखा ॥ सुखं
कुरुते न कुरुते वस ॥ युषा युक्त कुरुते सा कुरुते ॥ १२ ॥ अचन
यम मयि सा चन हिनां ४ विविधिं व्याधि मसा हयनां ॥ कुरु
यि युक्त युक्त सत्रां ॥ किन संगन जायते मयं ४ ॥ १३ ॥
गमं व्याधि गुरु किं ॥ गयो मियां किं सदा किं ॥ सत्र

मिमज्जस्य पूसाही मय्वं ४ यिका जस्य त्वं जिन रुत ॥ १४ ॥
ल्लमि ला क ग्वनयी गीयमानं ॥ मूअसि रुगवन मा मरुता
थ ४ लरूमिया मनूजी कमादिकया ती ॥ ता सयजाग समा
कूलया नि ॥ १५ ॥ वठविषयन्दियय अरु मनसा ॥ रुक
वरूपायंया कूलवयूया ॥ निर्यं रुत्ममया स्मिन सकलं

रुथला जा निमिद्रं ॥ रुमगाविकरं ॥ १६ ॥ नगुन संयमि
नमला केग ॥ पुअगा विविधिं रुलीं कामचा ४ रुना रुताया ३
यिकदायं ॥ सुगतिरुमगायामिहमा रु ॥ १७ ॥ साहं द्वय ३
विना गन रुद्र ॥ स्वं संसात्रन सादधि सु ४ यति था रुन गा रु
यनवा रु ॥ लंगुन रुद्रति रुति भागत्र ना रु ॥ १८ ॥ दसि रु

सुगता नूतन नत्रगा ॥ त्वं यत्तु हि न यद्दृष्टः खी न सत्याः ॥ नि
जिगद्गुय मा मस माताः ॥ त्वं स किं भू मक्षान अया ता ॥ १९ ॥
सकल रुग्ता न विं कि न न दत्ता ॥ त्वं यत्तु मयि द रुग्ता स दत्त
॥ रग वन अ नू न क नू ना सिंधुः ॥ त्वं रु न वि वि धां का ल स य
धू ॥ २० ॥ सि मा वि द मि न क म वि रंग ॥ त्वं यत्तु हि न वी ष

यं वा संधाः ॥ दि या ध्व न सं मा हि न चि रु ॥ त्वं या सक सा ध्व न
क्ष चि रु ॥ २१ ॥ यत्तु मय क नू न म यि क नू ना अ ॥ म हि यः
मि दू खं न क ला जा मि रु अं ॥ क थ मि या मा ह न क्षा र ग द यं
वि ष य स सि न क नू न रु म गा ॥ २२ ॥ सक ल रु ना थ य मि
क्ष क नू नः ॥ सा किं रु वे मा नि रु मा रु न ना ॥ रु न न न रु सि

खटविषयकं ॥ हवमा ॥ यत्रमा मावित्रयकं ॥ २३ ॥ नाथक
 यासयव्यामविगता ॥ सत्त्वबुद्ध ॥ वधधत्तधत्ता ॥ धत्तधत्त
 निस्समसिगवदूकग ॥ सजकिमिस्तंकेनमनिस्समगव्यं ॥
 ॥ २४ ॥ ॐ किरगवन्मत्तक्षनायि ॥ यन्युधसमकभदं
 गदकूनरुदा ॥ श्रीयाकनकावत्तयासजनयमिस्सुन्दतयि

उतमयि ॥ २ ॥

विधिविलास ॥ २५ ॥ ॐ ह्यायावसाकिगवत्तरुदासकाः
 सु ॥ यत्तयमियादविगंविगंसायंसमायं ॥ ॐ व ॐ ॥
 ॥ ३ ॥ नमावुद्धाय ॥ ॐ ॥ रुकमयिसूनसंघे ॥ सिद्धिगधर्व
 ऊर्क ॥ द्विविधयियुविधिं ॥ सायवागि ॥ यमिक ॥ अरुम
 यिकगगकि ॥ नोमिसंयुद्धमाय ॥ नरुसियगमूठमान्कि

किन्त्यानिदिनस ॥ १ ॥ अयिगदमिमयक ॥ अंयनि (गं।
वयासं ॥ अविनकनकव ॥ सुतयमायमाक ॥ सुतविमय
त्रिवम ॥ सुयलामसुतया ॥ दगवत्रमयनिम्यं ॥ सुयलामंय
लामं ॥ मदनवतविम ॥ कामय ॥ अककले ॥ विरु
वनदिनक ॥ म्मीतनाजातहंउ ॥ समसुखरुतयाउ

हृदसंज्ञानगज ॥ दगवत्र ॥ ३ ॥ असुत्रसुत्रनजाना ॥ आ
गऊत्मागहव ॥ सकनउवनधका ॥ लोकणसुदसद
सयिममनूऊधका ॥ अऊयानिस्वयंर ॥ दगवत्र ॥ ४ ॥
उदयगिमिमनह्ला ॥ विद्रमसुदगास ॥ विमिनकिनः
सहला ॥ वऊनकंयजाना ॥ जयियमिमनहात ॥ सवथसा

यिसूफा ॥ दगवन्न ॥ १ ॥ दिन दन्न सनया शुगीर सग्निं
गगभक ॥ कितक वन्न रुन्या सवन्न जामे सिय ॥ अविगग
मदनाग ॥ सवन्न सायिसूफ ॥ दगवन्न ॥ १ ॥ पवन्न उवन्न
क ॥ वाउगो द्वा द्वे वक्रा ॥ ययनियम विधिह ॥ सामवन्न
पवक्रा ॥ अमन्न कन्न शानि ॥ सायिष फ्राय सूफा ॥ दगवन्न

॥ १ ॥ दूवन्न दगनील ॥ दूमुली काय मारु ॥ सन्न मियू
वन्न हन्ता ॥ विग्न कृत्ति ग्नया ॥ हन्निय विचित्र सूफा ॥ गह्ना
वा ॥ गन्न मक्रा ॥ दगवन्न ॥ १ ॥ ६ ॥ हिमगि मिगि खन्नार ॥ स
यन्न ह्नाय वि त ॥ स्त्रीयून्न दहन्न दक ॥ वाउवन्न म्मिन्नयाय ॥
सहगि मिवन्न यूना ॥ सायिसूफ ॥ विग्ननी ॥ दगवन्न ॥ १ ॥ ६ ॥

मात्रिककुलिगयानिःदूर्जसादानवानाःसूत्रयमित्रयिगाः
व्याःविश्वमसूत्रवताःअनिगिनिगिचसूफःकामयंकनिम
एत॥दगवत्र॥१४॥हिमसंगिकुमजलाःमद्ययामात्रः
हमरु॥दृढकथितशुभागाःनागनिगकिहस्ता॥वत्रवूह
सयिकासो॥नवकिकष्टन॥दगवत्र॥१५॥गजमू

खदगनेकःसर्वकाविप्रहन्ता॥अविगकमदधामःवत्य
याजीष्टगधुगमयमित्रयिगूफा॥यानूनिवानमास्तु॥दग
वत्र॥१६॥अटसिक्कसुमनीनाःयस्यगकिहूमागाःन
वकससवयूष्य॥यूस्मूखाकाचहन्ताःछितयनकनशाः
सो॥निश्वसूफकूमागा॥दगवत्र॥१७॥कयित्रकनक

सायाः न कया ना नृभाः ॥ यगुपतिनमिकान् ॥ दग्धकायाः
 मियः समननदतिगांग ॥ हायिसूफाहूगां ॥ दगवत्र
 ॥ १४ ॥ ऊमवत्रभकवत्तः ॥ यरुदेत्यानगत्याः ॥ दिविपुवि
 गगल्लयाः साकयासातथान् ॥ रुवमिमदकणं ॥ विंकि
 नासूयिसूफा ॥ दगवत्र ॥ १५ ॥ अवयन्सूहना ॥ वत्सह

एभंगिप्रथा॥ कउयूजहविंभिष्यः॥ यासत्रामि कगगजः॥ य
 नयूयमिषिना सो॥ माहिनांगभयि सुफा॥ दगवत्र॥ १६
 एवकेतनिधिम एभ॥ माहनालायनागः॥ मनूययि न कना
 या॥ जामिनामूठचिह्न॥ समसुखरुनहाना॥ यातिगः॥ १७
 यि सुफा॥ दगवत्र॥ १८॥ राजगनयसनहाना॥ एवमाः॥

नां विमूयाः अलमस्वित्तयिचा न॥ पुनवदग्धदहा ३३ ह्यः
मिनिविहाना ॥ निश्य सुफचनगता ॥ दगवम ५ १७ ॥ अं
हाननिदत्ररुतिः नमसिषु सुफ ॥ रुषा विगा नगयनवि
षया यधन ॥ कात्र गुहा गुह रुतं यत्रि की हिमा ना ३ कागं
ह्रिय ॥ सननंभवत माहुरुकसी ॥ १९ ॥ सपुलागं नवकस्य

हानान्मात्ता न चक्रव ४ ॥ अहानं मिमिता धानानिश्य सुफा
हिमात्रवि ॥ २० ॥ सपुलागं सत्ररुतं ४ गिषाय सुहिनादि
न ॥ बुद्धधम्मवसंघं यधमामिदिनदिन ॥ २१ ॥ पुनय
लागं पुनरुहिमात्रवि ॥ पुनगगा कश्चपुनत्रयसर्वना ४ ॥
मय्युत्तमात्ता नथेवहमने ॥ गता गति मूरुत्तनामवूधं

ति ॥ २३ ॥ तिर्थेषु गच्छन्तं गतानि यि वन्ति ता यं नृपि व
 क्ति न च न लुप्तं मय्यर्थे ति ॥ २४ ॥ भक्तियोगे नैव यि संः
 लुप्तं स ॥ न जायते गुणनिधि गुणगगनस्य ॥ २५ ॥ लु
 त्वा सा का गुणमहा मनिवनं ॥ सद्धर्मयुग्मं समया किं
 मखतमया ॥ नैव सा का वितं च नृप लु लु त्वा तद्वयमा

॥ २६ ॥

द ग वत्तु गच्छा यत्रा विन्दता ॥ २६ ॥ नृतिग्रा भक्तमनिम
 ला वृद्ध हृदा न कस्य ॥ सुखं लुप्तं लुप्तं समाकं ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥ ममा सा कर्ता यथा ॥ लुप्तं यं मम कस्य कस्य स
 ला ॥ संयुक्तं च वदना वृद्धं नृप ॥ सद्धर्मज्ञानमकथ
 कतमं किं मार्गं ॥ नयन्त्या सि वनं तद्विदुः ज्ञानमाग्नि ॥ २९ ॥

उडगनांगवस्यिनकयासवकुं॥नकाधत्रं हिमडुषागः
मिवासूदनं॥प्रक्रस्वमंगुनिधत्रंमधूनं चवाक॥नयद
मयानिमद्वयवर्धस्वन्नमा मि॥१॥मासाधत्रंकनक
वर्धविरुषिगाग॥नयवयजठविरुषिमयोसचन्द्र॥
कयुगिनावनधनायसूवर्धवर्ध॥नयप्रयानिमद्वय

प्रधत्रंनमा मि॥२॥नसाकक्षमवसाकिगनामध्वयं॥
गङ्गाप्रविगसडवकससयनाग॥चिन्तामलियुवनकुंछु
सचष्टगु॥नयप्रयानिस्तुमिसर्वकनंनमा मि॥४॥
लंझानमागियनराविकसर्वसत्वा॥संसात्रयंकटिमिमा
ध्वमग्नसत्वा॥आसाकिग॥यथमनरुन्मयाधिमार्ग॥नं

यप्रयानिवनमार्गददंतमामि॥ १॥ गत्वा च यनननकवू
अविचिमग्नं॥ गतिकुमंडूदिविभासत्रहंसयस॥ यना
नकासकनदू॥ खविनागयन्ति॥ गंयप्रयानिननकाः
ग्निसमनमामि॥ ६॥ संज्ञासयनियमयात्कहग्नं॥
हमि॥ हधमनाक्रुतिउज्जगनकामनूयी॥ यकम्महमि

मिवधंसिगतनिमिर्ह॥ गंयप्रयानिहमभासनगंतमाः
मि॥ १॥ गत्वा च यननअतिनूयंमनाहवाय॥ १॥ कना
थमरुयंकनसर्वसत्या॥ दू॥ खाध्वकयस्रजाभिचिम
किदू॥ खं॥ गंयप्रयानिहमकिस्त्रिषगंतमामि॥ ६॥
त्वंपनत्वाकगकयकनूक्षायसन॥ गूचिमखंडयनयव

कजीष्टमग्नं ॥ कुरुवृषिंति नमो नमो रुषा उवाक्षं ॥ नय
प्रयाति रुषा नमो नमो नमो ॥ ६ ॥ अन्वा न्यरु कुरु
प्रयिंति नय रुषा ॥ संघीय नमो नमो ॥ ३ ॥ युव नमो नय
हि ॥ यस्मिं नमो नमो नमो रुषा उवाक्षं ॥ नय प्रयाति
नमो नमो नमो नमो ॥ १० ॥ गत्या नमो नमो नमो नमो

आदिवृद्धानिहधयः ॥ १४ ॥ ज्ञानेकचक्रममनाः ॥ ज्ञानमूर्किसुथ
 गतः ॥ १५ ॥ वागीश्वरामहावादिः ॥ वादिमाद्यादियूक्त
 वः ॥ वदमासुभावतिस्माः ॥ वादिसिंहायमाजिगं ॥ १६ ॥
 समन्तकमियाभावाः ॥ कृत्वा मासिसूदगनिः ॥ ग्रावत्सः ॥
 सुयहादिकि ॥ एहासुत्कहयकि ॥ १७ ॥ महालीव

गतः ॥ १८ ॥ गतः ॥ गतः ॥
 गवाधिमहात्रियः ॥ १९ ॥
 नमस्कृतमस्तुतः ॥ दग
 कृतः ॥ २० ॥ जगत्क
 यमनः ॥ गवाग्रीमा



गवहयशकमः ॥ क
 तकाकाः ॥ ग्रीमा
 काः ॥ धर्मध्वंजमहा
 ग्रीकमस्तुतः ॥
 महाविष्टः ॥ २१ ॥

सर्ववृद्धमहाभागाः सर्ववृद्धात्महावधकः॥ सर्ववृद्धमहाभा
 गः सर्ववृद्धकसासनः॥ ३० ॥ वरुनन्ताहिषकः॥ श्रीः सर्व
 जन्ताधियभजनः॥ सर्वकात्ताभवनयतिः॥ सर्ववृद्धधमाधि
 यः॥ ३१ ॥ सर्ववृद्धः महाधिरुः॥ सर्ववृद्धमनागतिः॥ सर्व
 वृद्धमहाकायः॥ सर्ववृद्धसन्धिमिः॥ ३२ ॥ वरुसूर्यः॥

महात्माकाः वरुन्दुति
 विस्रवः॥ वरुकात्तय
 वृद्धसंगीतिधमाधकः॥
 कागधकः॥ ३४ ॥ वि
 महानः॥ वरुनीष्टम



भादिमहाभागाः॥
 वृद्धमवक्रययिकाः॥ वृ
 शीमां॥ सर्ववृद्धान
 भागाः॥ वृद्धविद्याधमा
 वृद्धः॥ यमाक्रनः॥ ३५ ॥

६४ स्वकृदमहायानः यत्र धर्ममहायुधः ॥ त्रिनत्रिंशत्
 गामिहयः यत्र यद्विद्यार्थवि ॥ ३६ ॥ सर्वपात्रमिमांसा
 मिः सचरुमीविहस्य ॥ विसृज्य धर्मभेदाः सम्यग्ज्ञान
 न्द्रुत्यरु ॥ ३७ ॥ मायाज्ञानमहायागः सचरुकाः
 धियः यत्र ॥ अथ यत्र यथाका ॥ निगवह्मनकायधुकः

॥ ३८ ॥ समन्तरुदस
 धमहागर्भः विग्वनि
 लायागुः सचरुवस्वर
 र्वधर्मसरोयधुकः ॥
 माविवाधधुकः ॥ सर्व



र्गजगत्यनि ॥ सर्वय
 ॥ ३९ ॥ सचरुवस्वा
 यादधर्मविस्वार्थस
 महायागः सचधः
 र्गान्कमभिगुधः ॥

॥ ४१ ॥ किमिगस्य सन्नात्मा ॥ सम्यक्कं वृद्धयाधिधक ॥ य
 यक ॥ सर्ववृद्धयुद्धानां ॥ ह्यनाचित्स्य रागधन ॥ ४२ ॥
 ययकनाहानगमथाद्यायत्तासिगम ॥ ४३ ॥ अथसाध
 कः ॥ यमः ॥ सर्वोयायविष्णुधक ॥ सर्वसत्त्वद्रुमानार्थः ॥ सर्व
 सत्त्वयमायक ॥ ४४ ॥ १ ॥ कृगसंग्रहमसूत्रक ॥ अज्ञाननिं

यूदय्यहा ॥ धाग्राग
 क ॥ १ ॥ बाहूदन्दग
 कृणुका ला ला ॥ ग
 माकाक ॥ महोमकु
 क ॥ यादायुधनया



वीरवीरुत्समयध
 ययनेनरु ॥ गोम
 नं ॥ १ ॥ अकयादन
 यन्माधुगियताजा
 नाथदयधम्मार्थय

नमोऽर्था विग। भगवत् ॥ नानाविह्वलिन्यायार्थः ॥ शिष्टरुचिः
 हानसक्तनि ॥ १ ॥ अथ यथावार्थसक्तिः ॥ गूढतानासक्तिः
 यधिः ॥ रुच्यगागाद्यनिकम्भः ॥ रुच्ययमहासक्तिः ॥ २ ॥ गुह्यगु
 द्वाकधवत् ॥ सप्तचन्दामसुपुहः ॥ वाताक्रमधुतकाया ॥
 महाभागनखंपुहः ॥ ३ ॥ ॐ न्दनीत्तगसचिनाः ॥ महानीत्

कयाग्रधुकः ॥ महासक्तिः
 लाकधाङ्गकगाकति
 निधनसुत्वः ॥ अथ
 सुमाभायः ॥ सुधागग
 मासुंयुद्धमाग्नविः



निम्मानरुचक्षः ॥ ४ ॥
 महाक्रमः ॥ महासु
 ॥ ५ ॥ वाधंगक
 गेमाग्ननयविः ॥ स
 महासंलग्नः ॥ निसंलग्नः

गगनागमाः सर्वसत्त्वमनाजगः सर्वसत्त्वमनाजगः ॥ ११ ॥
 सर्वसत्त्वान्द्रियार्थः ॥ सर्वसत्त्वमनाहमे ॥ यं च स्कन्धार्थं न
 त्वं ॥ यं च स्कन्धविमलधृक् ॥ १२ ॥ सर्वनिर्यानि कागिष्ट
 सर्वनिर्यानि काविदः ॥ सर्वनिर्यानि मागर्जस्तु ॥ सर्वनिर्या
 नदगक ॥ १३ ॥ द्वादशगगर्हवाक्रान्ता ॥ द्वादशगगकान्तः

सुखधृक् ॥ यदुसस्य
 द्वादशगगकान्तसस्यार्थ
 ससवाहि ॥ विषुख
 नः कायकाटिविरु
 रुक्रमार्थविउ ॥ १४ ॥



द्वादशगगकान्तसस्यार्थ ॥ १५ ॥
 त्वया ॥ विगस्याकाः
 १६ ॥ अमयदूधनिमा
 नारिसमयाः सर्ववि
 श्यायायः ॥ गगदर्थविः

रावक ४॥ यानस्तीनयनिर्यागि ४७ कयानरुसस्मिता ४८ १॥
 कुगधुदधिसु ४९ ॥ कामधुदधिसु ४९ ॥ अघादधिसु
 मूली १॥ १॥ यागकान्तात्रमिसुग ४९ १॥ १॥ १॥ १॥
 कुग १॥ सुपदीनसयासनं ॥ यज्ञायामहाकृत्ना १॥ अमा
 चगजगदर्थकृत् १॥ १॥ १॥ सर्वसज्ञायदोता १॥ १॥ विज्ञाना

१॥ १॥ निमाधधुद १॥ सु
 मि १॥ २० ॥ सर्वसत्य
 सर्वसत्यमनाज्ञादि
 नाविशमायन ४॥ सर्व
 गिरुयर्थ १॥ सर्वार्थगि



१॥ १॥ सर्वसत्यमनाग
 वरुसमयनागन ४॥
 मि १॥ २१ ॥ सिद्धा ४॥
 ४॥ निसंदिग्धधर्मः
 २॥ ययस्कंधार्थरु

कायाग १ सर्वसंकाशकायमात्र ४ ॥ निम्नानि काया
 काया १५ ॥ ४ ॥ वृद्धनिम्नानि वंगधके ॥ दगदिग्वीखनिमा
 ना १ ॥ यथावज्जगदर्थक ४ ॥ १ ॥ दवाक्तिदवदव ४ ॥
 नन्दादानवा ४ ॥ यमि ४ ॥ जमनलसूत्रय १ ॥ युमथयिथ
 खन ४ ॥ ६ ॥ उमीर्षुएवकान्नाय ४ ॥ कसाकाजगलु

४ ॥ यथाकमदि ए
 मेथिसन्नाहसना
 प्रधनया ४ ॥ कगइ
 जिवात्र १ ॥ गकुमा
 वृद्धासाकनायक ४



यमिसहान ४ ॥ १ ॥
 यमिक ४ ॥ यज्ञाखः
 ४ ॥ ४ ॥ मात्रात्रिमात्र
 यमानयनूजमा १ ॥
 गोरियाशय १ ॥ मात्रा

नायवनिद्रासः॥ अञ्चनाय नमो नमो नमः सुयत्रमायु
 नः॥ १०॥ तेनाककमगतिः॥ या मायया न विरमः॥ क
 विद्यः॥ मग्नियपूतः॥ य उरिहृष उत सति॥ ११॥ वाधि
 सत्वमहासत्वः॥ सा कानि नाम हृदिकः॥ यज्ञायात्रमि
 तानिष्टः॥ यज्ञाकत्वत्वमागतिः॥ १२॥ अत्मावित्यत्रवि

सर्व साविद्याद्ग
 हानाधियः॥ यत्रः॥
 जार्थदगकः॥ ययूया
 ॥ १४॥ यत्रमार्थवि
 सर्वसंयत्करः॥ ग्रा



मगनाकानाः॥ इया
 यमिष्टुष्टुः॥ मकुम
 नियानिरुययापिचा
 कगुरुगमहानः॥
 नायत्रः॥ १५॥ कुमो

नूस्कागथापंचदश ॥ ६३ ॥ समस्तवस्तुवज्रागुः ॥ हन
काटिनमास्तु ॥ नमास्तु न्यगागरुः ॥ बुद्धयाधिनमास्तु
॥ १ ॥ बुद्धजागनमास्तु ॥ बुद्धकायनमानमः ॥
बुद्धयोगिनमास्तु ॥ बुद्धमाउनमानमः ॥ २ ॥ बुद्ध
स्मितीनमास्तु ॥ बुद्धसासनमानमः ॥ बुद्धवाचनः

मस्तु ॥ बुद्धरावनमान ॥ ३ ॥ अरुवाएवनमस्तु
नमस्तु बुद्धसंरुव ॥ गगनारुवनमास्तु ॥ नमस्तुज्ञान
संरुव ॥ ४ ॥ मायाज्ञाननमास्तु ॥ नमस्तु बुद्धनादः
नमस्तु सर्वसत्त्वयाः ॥ ज्ञानकायनमास्तु ॥ ५ ॥ ॐ मि
यस्मिन् गथागनस्तु मिज्ञानगथापंचदश ॥ ६४ ॥ ॐ सर्वधः

थ सम्यक् संवृद्धया पक् ॥ ३ ॥ अग्नौ भस्म स्यात्तथा स ॥ विः
मूर्तिरुत्तकाक्रित ॥ यथा मा रण वि सू द्र यी ॥ मा मा जा सा
नयादिन ॥ ४ ॥ गमिन्नादात्र वे पत्न्यः महाथ अग्नय
कृत् ॥ वृद्धा नां विषया हवः ॥ सम्यक् संवृद्धा विन ॥ ५ ॥
उय सं हान् गम थ यं च ॥ ६ ॥ आर्य मा मा जा सा ॥ वा

उस सा ह्ययिका ॥ महा या ग ॥ गला नय कि स मा धि जा स्य
गला रुग य न्क र्ता ग न ॥ ग्री ग म् क म् षी ला वि न रुग य न्क
मङ्गु ग्री हान सत्त्व स्य पत्र मा र्थ ना म संगी कि स मा य ॥
॥ ७ ॥ अथ धर्मा ह्नु य ला वा ॥ ह्नु य न्क र्ता ग न्क र्ता ग
न ॥ हव द ह्नु यं यथा नि ना ध ॥ जे यं न्वा दि महा य म न्

